मुद्रावाणी

अंक–9

भारत सरकार टकसाल, नोएडा

(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)

डी-2, सेक्टर-1, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

आईएसओ: 9001:2015,14001:2015 (प्रमाणित) 45001:2018

राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह 2025, भारत मंडपम, नई दिल्ली

भारत मंडपम, नई दिल्ली में दिनांक 26 जून 2025 को राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह का भारत प्रतिभूति मुद्रण एवं मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड (एसपीएमसीआईएल) द्वारा लगाए गए स्टाल पर आगमन हुआ। माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह का स्वागत करते हुए श्री दुर्गेश पति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, भारत सरकार टकसाल, नोएडा।

अनुक्रमणिका

राजभाषा पत्रिका

संरक्षक:

श्री दुर्गेश पति तिवारी
मुख्य महाप्रबंधक

उप संरक्षक:

श्री रविन्दर सिंह
अपर महाप्रबंधक
(तक.प्रचा.)

प्रकाशन समिति

श्रीमती अनिला अग्रवाल,
संयुक्त महाप्रबंधक
(वित्त एवं लेखा)

श्री प्रकाश कुमार
संयुक्त महाप्रबंधक
(मानव संसाधन)

सुश्री रेणु भसीन
संयुक्त महाप्रबंधक
(मानव संसाधन)

क्र.सं.	पाठ	पृष्ठ सं.
1	संदेश	2–4
2	संरक्षक की कलम से	5
3	संपादकीय	6
4	सरकारी कार्यालयो में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का महत्व	7–9
5	बहु कौशल विकास एवं इसके लाभ	10
6	निरोगी काया : सबसे बड़ी माया	11–13
7	जीवन की सीख	14
8	बदलाव	14
9	टीम वर्क का महत्व	15
10	स्वास्थ्य श्लोक	16
11	बिना इन्टरनेट मैप	17
12	हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा	18–19
13	कृत्रिम बुद्धिमत्ता वरदान या अभिशाप	20–21
14	समय और सफलता	22
15	अनंत की खोज	22
16	समझदारी	23–24
17	सिक्का मुद्रण विभाग : भारतीय मुद्रा की नींव	24
18	चैट बिद फिश	25
19	प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत	26
20	जीवन चक और सुख का द्वंद	27–29
21	जल संकट	29
22	वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ	30–31
23	संस्कृत का महत्व	31
24	पंच केदार	32–33
25	गतिविधियाँ	34–40

संपादक :
श्री हीरामणि सुयाल, उप प्रबंधक (रा.भा.)

संकलन एवं डिजाइन : श्री अरिहन्त जैन

"पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। रचना की मौलिकता और अन्य किसी विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे"

विजय रंजन सिंह
VIJAY RANJAN SINGH
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Chairman & Managing Director
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
मिनीरत्न श्रेणी-I, सी.पी.एस.ई.
Miniratna Category-I, C.P.S.E.
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
(Wholly owned by Govt. of India)

संदेश

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा द्वारा अपनी पत्रिका 'मुद्रावाणी' के नौवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका संस्थागत प्रगति, उन्नति एवं समृद्धि का प्रतिबिम्ब होती है और संस्थागत मूल्यों, लक्ष्यों तथा ध्येयों को व्यापक रूप से प्रचारित एवं प्रसारित करती है।

भारत आदिकाल से ही अपनी भाषाई समृद्धि, विविधताओं एवं समरसता के लिए विख्यात है। सदियों से अनेक विद्वान और पुरोधा हिन्दी के विकास में अनुकरणीय योगदान देते रहे और उन्होंने अपनी साहित्यिक तपस्या से हिंदी की लौ को जलाए रखा। हिन्दी को वर्ष 1949 में राजभाषा का दर्जा मिलने के बाद इसका उत्तरोत्तर विकास हो रहा है। समय के साथ हिंदी सरकारी कार्यालयों में लंबे समय से चली आ रही अँग्रेजी के बीच अपनी जगह बनाने में सफल रही है। अब यह हम सबका दायित्व है कि हम हिंदी की प्रगति सुनिश्चित करते हुए आने वाली पीढ़ी को एक समृद्ध भाषायी विरासत सौंपें।

हाल ही में, भारत सरकार टकसाल, नोएडा को वर्ष 2023–24 के दौरान राजभाषा का उत्कृष्ट कार्यान्वयन करने के लिए उत्तरी–2 क्षेत्र में सार्वजनिक उपक्रमों की श्रेणी में "प्रथम पुरस्कार" प्राप्त हुआ है जिसके लिए इकाई के सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण बधाई के पात्र हैं।

मैं भारत सरकार टकसाल, नोएडा की पत्रिका के संपादक मण्डल तथा रचनाकारों को नए अंक के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। आशा है कि राजभाषा हिंदी की उन्नति के प्रयास इसी ऊर्जा के साथ आगे भी जारी रहेंगे।

(विजय रंजन सिंह)

सुनील कुमार सिन्हा
SUNIL KUMAR SINHA
निदेशक (मानव संसाधन)
Director (Human Resource)
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
मिनीरत्न श्रेणी-I, सी.पी.एस.ई.
Miniratna Category-I, C.P.S.E.
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
(Wholly owned by Govt. of India)

संदेश

मुझे यह बताते हुए असीम प्रसन्नता हो रही है कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा द्वारा अपनी पत्रिका 'मुद्रावाणी' के नौवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी के विकास में भारतीय समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिंदी की सरलता के कारण भारतीय समाज ने इसे अपनाया है और विभिन्न भाषायी अवदानों के माध्यम से इसे समृद्ध भी किया है। इन्हीं विशेषताओं के कारण ही हिंदी आज जन–जन की भाषा बन पाई है। भाषा में जितनी सरलता होगी उतनी ही ज्यादा यह समाज में स्वीकार्य होती है। वर्तमान में, सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रयोग ने हिंदी के उज्ज्वल भविष्य के लिए नई राहें प्रशस्त की हैं। हिंदी को नई सूचना प्रौद्योगिकी की जरूरतों के मुताबिक ढाले जाने से यह देश के बहुमुखी विकास में उपयोगी सिद्ध हो रही है।

भारत सरकार टकसाल, नोएडा को उत्तरी–2 क्षेत्र में उपक्रमों की श्रेणी में, वर्ष 2023–24 के दौरान राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए "प्रथम" पुरस्कार प्राप्त होने की उपलब्धि पर मैं समस्त टकसाल परिवार को हार्दिक बधाई देता हूँ। इसी तरह, आगे भी, इकाई राजभाषा के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित रहेगी ऐसी आशा है।

संस्थान की पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम प्रकट करने का एक साधन है जो विचारों और लेखों का एक खूबसूरत संकलन होती है। मैं संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को पत्रिका के नवीन अंक के प्रकाशन के लिए शुभेच्छाएँ प्रेषित करता हूँ।

(सुनील कुमार सिन्हा)

टी.नागराजन
T. NAGRAJAN
निदेशक (वित्त)
Director (Finance)
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
मिनीरत्न श्रेणी-I, सी.पी.एस.ई.
Miniratna Category-I, C.P.S.E.
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
(Wholly owned by Govt. of India)

संदेश

यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा द्वारा अपनी पत्रिका'मुद्रावाणी' के नौवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

वर्तमान में भारत सरकार के प्रयासों से राजभाषा हिंदी देश के कोने–कोने में प्रसारित की जा रही है। मैंने अनुभव किया है कि गैर हिन्दी भाषी राज्यों में भी हिंदी को बड़े प्यार के साथ स्वीकार किया जा रहा है। सरकार के इस प्रयास से भाषायी दूरियाँ कम हो रही हैं और देश की सांस्कृतिक विविधता एक साथ जुड़ रही हैं जो देश की एकता और अखंडता के लिए अत्यावश्यक है।

भारत सरकार टकसाल, नोएडा आरंभ से ही राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में नए कीर्तिमान हासिल करता आ रहा है, जिसके लिए इकाई प्रबंधन एवं कर्मचारियों के प्रयास प्रशंसनीय हैं। कार्यालयों में राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए छोटे–छोटे प्रयास बहुत कारगर साबित होते हैं। आज के समय में राजभाषा का आईटी से अच्छा तालमेल हो गया है, जिससे डेस्कटॉप, लैपटॉप या मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर वॉइस टाइपिंग, गूगल अनुवाद और अन्य अनुवाद सॉफ्टवेयर की मदद से हिन्दी में काम करना बहुत आसान हो गया है।

संस्थान की पत्रिका न केवल उपलब्धियों और क्रियाकलापों के प्रचार–प्रसार का माध्यम होती है, बल्कि यह ज्ञानवर्धन का एक प्रभावी साधन भी है। साथ ही, यह नए रचनाकारों को अपनी साहित्यिक प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करती है। मैं नोएडा टकसाल प्रबंधन को पत्रिका के सफल प्रकाशन कें लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

टी. नागराजन

(टी.नागराजन)

दुर्गेश पति तिवारी
DURGESH PATI TIWARI
मुख्य महाप्रबंधक
Chief General Manager
भारत सरकार टकसाल, नोएडा
India Government Mint, Noida
(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)
(A Unit of Security Printing & Minting Corporation of India Ltd.)
डी-2, सेक्टर-1, नोएडा/D-2, Sector-1, Noida-201301

संरक्षक की कलम से

मुझे एक बार पुनः गृह–पत्रिका ''मुद्रावाणी'' के माध्यम से आप सभी से रूबरू होने का मौका मिला है। विगत वर्ष की स्मृतियों को समेटे हुए हमारी पत्रिका ''मुद्रावाणी'' के नौवें अंक का प्रकाशन गौरव का विषय है। यह पत्रिका न केवल अनुपम एवं अभिनव आलेखों का संगम है अपितु विगत वर्ष की स्मृतियों का पुनरावलोकन भी प्रस्तुत करती है।

भारत सरकार टकसाल, नोएडा आरंभ से ही मुद्रा निर्माण में आगे रहने के साथ–साथ विभिन्न प्रासंगिक क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रहा है। चाहे राजभाषा हो, पर्यावरण संरक्षण या सीएसआर की कल्याणकारी पहल, प्रत्येक क्षेत्र में भारत सरकार टकसाल, नोएडा के क्रियाकलाप अग्रणी साबित हुए हैं।

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में कर्मचारियों ने राजभाषा के कार्यान्वयन में बदलते तकनीकी परिवेश को बड़ी ही कुशलता के साथ अपनाया है तथा वे राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रभावी ई–उपकरणों का बदलते लक्ष्यों और प्रयोजनों के अनुरूप बेहतर उपयोग कर रहें है। साथ ही, सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए राजभाषा के कार्यक्रमों में भी प्रतिभाग भी कर रहे हैं।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भारत सरकार टकसाल, नोएडा को वर्ष 2023–24 के लिए उपक्रमों की श्रेणी में 'क' क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया जाना इकाई में राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन को चरितार्थ करता है।

मैं 'मुद्रावाणी' के नौवें अंक के प्रकाशन के अवसर पर इकाई के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, आलेखों के रचनाकारों तथा पत्रिका संपादक मण्डल को इस सफल प्रयास की अनंत शुभकामनाएं देता हूँ। मेरी कामना है कि राजभाषा के प्रचार – प्रसार के लिए ये प्रयास यों ही चलते रहें।

(दुर्गेश पति तिवारी)

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

भारत सरकार टकसाल, नोएडा की पत्रिका "मुद्रावाणी" के 9वें अंक को आपके सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है।

"मुद्रावाणी" के प्रस्तुत अंक में गद्य एवं पद्य तथा अन्य साहित्यिक विधाओं की अनेकों रचनाएँ शामिल की गई हैं मुझे लगता है आप सबको ये रचनाएँ अच्छी लगेंगी। पत्रिका के संपादन के दौरान मैंने अनुभव किया कि बहुत से कर्मचारियों द्वारा अपने आलेख राजभाषा अनुभाग को प्रेषित किए गए जो मेरे लिए यह अत्यंत सुखद और संतुष्टिजनक था। अन्य अवसरों पर भी राजभाषा की गतिविधियों में आपकी प्रतिभागिता ऐसी ही ऊर्जा और सकारात्मक सोच के साथ अपेक्षित है।

"मुद्रावाणी" के नवीन अंक के लिए निगम मुख्यालय से वरिष्ठ प्रबंधन के आशीर्वादरूपी संदेश प्राप्त हुए। मैं वरिष्ठ प्रबंधन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। साथ ही, पत्रिका को अंतिम रूप देने में संरक्षक महोदय एवं वरिष्ठ अधिकारीगण का मार्गदर्शन सतत प्राप्त होता रहा, जिसके लिए उन सबका भी मैं आभारी हूँ।

पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रचार में हमारा एक छोटा सा प्रयास है। आपको "मुद्रावाणी" का यह अंक इस विश्वास के साथ सौंप रहा हूँ कि आप आगे भी इसी तरह राजभाषा के कार्यों से जुड़े रहेंगे और इकाई के लिए नई उपलब्धियों को हासिल करने में योगदान देते रहेंगे। आशा है "मुद्रावाणी" का यह आपको अंक पसंद आएगा।

(हीरामणि सुयाल)
उप प्रबंधक (रा.भा.)

सरकारी कार्यालयों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का महत्व

रविन्दर सिंह
अपर महाप्रबंधक (तक.प्रचा.)

भारत जैसे विशाल और विविधताओं से भरे देश में प्रशासनिक व्यवस्था को प्रभावशाली, पारदर्शी और उत्तरदायी बनाना एक बड़ी चुनौती है। सरकारी कार्यालयों पर जनसेवाओं की भारी जिम्मेदारी होती है। इनमें पारदर्शिता, दक्षता और समयबद्धता सुनिश्चित करने के लिए नवीन तकनीकों की आवश्यकता होती है। ऐसी ही एक तकनीक है – कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस– एआई)। आज के डिजिटल युग में सरकारी तंत्र में एआई का उपयोग व्यवस्था को अधिक उत्तरदायी, पारदर्शी और तेज बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्या है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अर्थ है– मशीनों को इस प्रकार तैयार करना कि वे इंसानी मस्तिष्क की तरह सोच सकें, निर्णय ले सकें और समस्याओं को हल कर सकें। सरकारी कार्यालयों में जब ऐसे उपकरण या सॉफ्टवेयर लगाए जाते हैं जो निर्णय लेने, डाटा का विश्लेषण करने, नागरिक सेवाओं को स्वचालित करने आदि में सक्षम होते हैं, तो ये कार्यालय अधिक प्रभावी हो जाते हैं।

सरकारी कार्यालयों में एआई के उपयोग के क्षेत्र

सार्वजनिक सेवाओं का डिजिटलीकरण : सरकारी सेवाओं को आम नागरिक तक पहुंचाने के लिए ऑनलाइन पोर्टल्स, मोबाइल ऐप्स और हेल्पडेस्क अब ए.आई. द्वारा संचालित हो रहे हैं। उदाहरण के लिए, उमंग (UMANG) ऐप पर नागरिक अनेक सेवाएं बिना सरकारी दफ्तर गए प्राप्त कर सकते हैं।

ई–गवर्नेंस में सुधार : एआई आधारित चौटबॉट्स, जैसे कि MyGov Helpdesk, नागरिकों के प्रश्नों का उत्तर तुरंत देते हैं। इससे जानकारी पाने के लिए लाइन में खड़े होने या कई चक्कर लगाने की आवश्यकता नहीं रहती।

फाइल प्रक्रिया और दस्तावेज प्रबंधन : सरकारी कार्यालयों में फाइलों का ढेर लगा होता है। एआई तकनीक की मदद से इन दस्तावेजों को स्कैन कर ऑटोमेटिकली वर्गीकृत किया जा सकता है, जिससे फाइल ट्रैकिंग और प्रक्रिया में तेजी आती है।

भ्रष्टाचार पर नियंत्रण : ए आई आधारित निगरानी प्रणाली संदिग्ध लेन–देन, अनियमितताओं और जालसाजी को पहचान सकती है। इससे

रिश्वतखोरी, धोखाधड़ी और लालफीताशाही पर नियंत्रण किया जा सकता है।

भविष्यवाणी और योजना निर्माण : सरकारी योजनाओं की योजना बनाते समय एआई की मदद से आंकड़ों का विश्लेषण करके भविष्य की आवश्यकताओं का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। जैसे– मौसम आधारित फसल बीमा योजना, स्वास्थ्य नीति निर्माण आदि।

सरकारी कार्यालयों में एआई के विशेष लाभ

कार्य दक्षता में वृद्धि : एआई मशीनें बिना थके लंबे समय तक काम कर सकती हैं। सरकारी बाबुओं पर कार्य का दबाव कम होता है और निर्णय लेने में गति आती है।

पारदर्शिता और उत्तरदायित्व : एआई आधारित ट्रैकिंग सिस्टम से यह देखा जा सकता है कि किस फाइल पर किस अधिकारी ने कितना समय लिया। इससे जवाबदेही बढ़ती है और फालतू देरी घटती है।

जन शिकायत निवारण में सुधार : ऑनलाइन शिकायत निवारण तंत्र में एआई शिकायत की श्रेणी, स्थान, अधिकारी आदि के अनुसार शिकायत को स्वतः आगे बढ़ा सकता है। इससे समाधान शीघ्र और न्यायसंगत होता है।

भाषा अनुवाद और संवाद : भारत जैसे बहुभाषी देश में एआई आधारित अनुवाद उपकरण (जैसे गूगल ट्रांस्लेट या भाषिणी) सरकारी अधिकारियों को नागरिकों से उनकी मातृभाषा में संवाद स्थापित करने में मदद करते हैं।

डेटा सुरक्षा और साइबर निगरानी : एआई तकनीक का प्रयोग सरकारी डाटा की सुरक्षा के लिए भी किया जा रहा है। संदेहास्पद गतिविधियों की पहचान करना, साइबर हमलों को रोकना – ये सब अब एआई की मदद से संभव हो रहा है।

भारत सरकार द्वारा ए.आई. संबधी पहलें

भारत सरकार ने एआई के विकास और उपयोग के लिए अनेक योजनाएं चलाई हैं :

- **नीति आयोग की ''एआई फॉर ऑल'' (AI for All) नीति** के तहत कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, शहरी विकास और परिवहन क्षेत्रों में एआई के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- **राष्ट्रीय एआई पोर्टल** (https://indiaai-gov-in) : यह पोर्टल एआई से जुड़ी सरकारी पहलों, शोध, और नीतियों की जानकारी प्रदान करता है।
- **भाषिणी परियोजना** : भारतीय भाषाओं में संवाद को बढ़ावा देने के लिए यह एआई आधारित अनुवादक प्लेटफॉर्म है।

विभिन्न सरकारी क्षेत्रों में एआई का प्रभाव

राजस्व विभाग में उपयोग : एआई की मदद से टैक्स चोरी की पहचान, संपत्ति मूल्यांकन, और आयकर रिटर्न की जांच तेज और सटीक हुई है।

स्वास्थ्य विभाग : कोविड–19 महामारी के समय आरोग्य सेतु ऐप में एआई तकनीक का उपयोग कर संपर्क ट्रेसिंग, जोखिम मूल्यांकन और स्थान आधारित अलर्ट दिए गए।

पुलिस और कानून व्यवस्था : चेहरा पहचानने वाली तकनीक (Face Recognition), अपराध का पूर्वानुमान (Predictive Policing) जैसे एआई टूल्स से पुलिस कार्य कुशल और स्मार्ट बन रही है।

रेलवे और परिवहन विभाग : एआई आधारित टिकटिंग सिस्टम, भीड़ पूर्वानुमान, ट्रेन की स्थिति की निगरानी आदि से यात्रियों को बेहतर सेवाएं मिल रही हैं।

चुनौतियाँ और सावधानियाँ

हालांकि एआई तकनीक के अनेक लाभ हैं, परंतु इसके प्रयोग में कुछ सावधानियाँ बरतना भी आवश्यक है :

- **निजता का हनन :** सरकारी डेटा के एआई विश्लेषण में नागरिकों की व्यक्तिगत जानकारी सुरक्षित रहनी चाहिए।
- **रोजगार की चिंता :** यदि अधिकतर कार्य मशीनें करने लगेंगी, तो कम कुशल कर्मचारियों का भविष्य क्या होगा?
- **भेदभाव की आशंका :** यदि एआई को प्रशिक्षित करने वाले डेटा में पक्षपात है, तो वह गलत निर्णय भी ले सकता है।
- **तकनीकी साक्षरता की कमी :** सभी सरकारी कर्मचारी अभी तकनीक के प्रयोग में दक्ष नहीं हैं, जिससे इसका समुचित उपयोग सीमित रह सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ऐसी क्रांतिकारी तकनीक है, जो यदि सही दिशा में उपयोग की जाए, तो सरकारी कार्यालयों की कार्यप्रणाली में अभूतपूर्व परिवर्तन ला सकती है। पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, दक्षता और जनसहभागिता – ये सभी एआई के माध्यम से संभव हो सकते हैं, परंतु इसके प्रयोग के दौरान हमें नैतिकता, गोपनीयता और मानवीय मूल्यों का ध्यान रखना अनिवार्य है।

भारत जैसे लोकतांत्रिक और विकासशील देश के लिए यह आवश्यक है कि वह तकनीक को आम आदमी के हित में उपयोग करे। एआई को सिर्फ तकनीकी उपकरण नहीं, बल्कि एक **"जन कल्याणकारी यंत्र"** के रूप में अपनाने की आवश्यकता है। इससे न केवल सरकारी व्यवस्था में सुधार आएगा, बल्कि जनता का सरकार पर विश्वास भी बढ़ेगा।

"हृदय की कोई भाषा नहीं है,
हृदय–हृदय से बातचीत करता है
और हिंदी हृदय की भाषा है।"

–महात्मा गांधी

बहु कौशल विकास एवं इसके लाभ

प्रकाश कुमार
संयु. महाप्रबंधक (मा.सं.)

आज हम आधुनिक युग में जी रहे हैं। आज तकनीकी के इस बदलते दौर पर नित नए तकनीकी अनुसंधान हो रहे हैं और इन तकनीकी अनुसंधानों के अनुसार स्वयं को परिष्कृत कर विकास में भागीदारी करना समय की मांग है। आज आर्थिकी के लिए विकास एवं कौशल तक सीमित नहीं है अपितु बहु–कौशल तक जा पहुँचा है। भारत में बहु कौशल विकास, प्रशिक्षण और शिक्षा के माध्यम से कार्यबल की रोजगार क्षमता और उत्पादकता बढ़ाने पर केंद्रित है। यह आर्थिक विकास, बेरोजगारी कम करने और भारतीय नागरिकों के जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

बहु विकास न केवल आपके व्यक्तित्व को निखारता है अपितु आपके आत्म विश्वास को भी सुदृढ़ करता है। बहुविकास के माध्यम से ही अपनी अर्थव्यवस्था को निखारने और विकसित करने के स्वपन को साकार किया जा सकता है। बहु विकास एक ऐसा वटवृक्ष है, जिसके अंदर उन्नति एवं उत्थान के पुष्प पल्लवित होते हैं। बहु विकास की कुछ मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

लचीलापन और प्रतिक्रियाशीलता : संगठन बदलते बाजार की मांगों के अनुकूल तेजी से प्रतिक्रिया कर सकते हैं, जिससे दक्षता और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ती है।

उत्पादकता में वृद्धि : कर्मचारी अधिक काम पूरा कर सकते हैं और कम समय में ज्यादा काम कर सकते हैं, जिससे समग्र उत्पादकता बढ़ती है।

बेहतर करियर के अवसर : कर्मचारी विभिन्न भूमिकाओं के लिए योग्य हो जाते हैं, जिससे उन्हें नौकरी बदलने या पदोन्नति के अच्छे अवसर मिलते हैं।

नवाचार और अनुकूलन : बहु–कुशल कर्मचारी नए कौशल सीखने में सक्षम होते हैं, जिससे वे नए विचारों को अपनाने और कंपनी को आगे बढ़ाने में मदद करते हैं।

कर्मचारी का मनोबल : कर्मचारियों को नई चीजें सीखने का अवसर मिलता है, जिससे उनकी नौकरी की सुरक्षा बढ़ती है और वे अधिक संतुष्ट महसूस करते हैं।

संसाधनों का अनुकूलन : एक बहु–कुशल कार्यबल विभिन्न कार्यों को संभाल सकता है, जिससे संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है।

बहु–कौशल एक ऐसा कौशल है जो उन संगठनों के लिए बेहद फायदेमंद है जिन्हें तेज–तर्रार, प्रतिक्रियाशील वातावरण (आजकल लगभग हर व्यवसाय) से निपटना पड़ता है। प्रभावी बहु–कौशल दक्षता, प्रतिस्पर्धात्मकता, गुणवत्ता, उत्पादन और दक्षताओं को बढ़ाता है। कुल मिलाकर, बहु–कौशल वाले कर्मचारी किसी संगठन को बाजार की बदलती परिस्थितियों और बढ़ती माँगों के अनुकूल ढलने की क्षमता प्रदान करते हैं।

इसके अलावा, यह लचीलापन कंपनियों को एक सुसंगत व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाने में सक्षम बनाता है जिसका उत्पादकता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

निरोगी काया : सबसे बड़ी माया

रेणु भसीन
सयुंक्त महाप्रबन्धक (मा.सं.)

मनुष्य के स्वास्थ्य से तात्पर्य शारीरिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य से है। किसी भी व्यक्ति के स्वास्थ्य को पर्यावरण हर तरह से प्रभावित करता है। आमतौर पर लोग सिर्फ अपने शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में ही बात करते हैं और चिंता करते हैं लेकिन अपने शरीर को पूरी तरह से स्वस्थ रखने के लिए मानसिक और मनोवैज्ञानिक दोनों तरह के स्वास्थ्य को बनाए रखना जरूरी है। स्वास्थ्य हमारी असली संपत्ति है। स्वस्थ मनुष्य ही सुखी जीवन जी सकता है।

अच्छा स्वास्थ्य केवल बीमारी न होने का नाम नहीं है, बल्कि यह एक सम्पूर्ण अवस्था है जिसमें शारीरिक ऊर्जा, मानसिक शांति और सामाजिक संतुलन शामिल होता है। समय पर पोषण, पर्याप्त आराम और सकारात्मक सोच इंसान को अंदर से मजबूत बनाते हैं। लोग अक्सर पैसा कमाने के लिए कड़ी मेहनत करने को बहुत ज़्यादा महत्व देते हैं और अपने स्वास्थ्य की बिल्कुल भी परवाह नहीं करते। बहुत से लोग यह नहीं समझते कि जब तक वे बाहर घूमने–फिरने और अपने शरीर का इस्तेमाल विभिन्न गतिविधियों के लिए करने लायक स्वस्थ नहीं होंगे तब तक वे अपनी मर्जी से कुछ भी नहीं कर पाएँगे और जो पैसा उन्होने कमाया है वो उससे कुछ भी भोग नहीं पाएँगे। आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में "Work&Life Balance" यानि काम और निजी जीवन का संतुलन बनाना स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। अगर यह संतुलन बिगड़ जाए तो व्यक्ति तनाव, अनिद्रा और गंभीर बीमारियों का शिकार हो सकता है। लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए ही दुनिया भर के संगठन और सरकारें लगातार सामाजिक और ऑनलाइन स्वास्थ्य अभियान चलाती रहती हैं।

हर व्यक्ति को प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा प्राप्त करने का अधिकार है, चाहे उसकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति कुछ भी हो। स्वस्थ रहना ही एक संतोषजनक और उत्पादक जीवन जीने का एकमात्र तरीका है। शोध से पता चला है कि विभिन्न बीमारियों के कारण अस्पतालों में भर्ती होने वाले लोगों की संख्या बढ़ रही है। अब महामारी के साथ अगर आप चीजों को बहुत हल्के में लेते हैं तो यह और भी जोखिम भरा है। अगर हम एक स्वस्थ जीवन जीना चाहते हैं, तो समय आ गया है कि हम सभी अपने शारीरिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का ध्यान रखने का मन बना लें। लोगों को यह समझने की जरूरत है कि अगर आप शारीरिक और मानसिक रूप से सक्रिय नहीं रह पा रहे हैं तो कोई भी धन–संपत्ति आपके काम नहीं आएगी। धन–संपत्ति आपको एक अच्छा जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है परंतु धन–संपत्ति आपके शरीर को निरोगी नहीं रख सकती। धन से आप सब कुछ खरीद सकते है परंतु अच्छा स्वास्थ्य नहीं खरीद सकते। लोगों को ये भी समझने की जरूरत है कि सबसे बड़ी माया केवल और केवल निरोगी काया है। हम पैसे से भौतिकवादी चीजें तो खरीद सकते हैं परंतु अपने स्वास्थ्य को नहीं खरीद सकते।

स्वस्थ रहने के रहस्य :

अपने दिन की शुरुआत सही तरीके से करें : योग, कसरत, दौड़ना, साइकिल चलाना एवं ध्यान का निरंतर अभ्यास करने से आपको एक ऊर्जावान और सकारात्मक दिन की शुरुआत करने में मदद मिल सकती है।

सही और अच्छा खाओ : सही प्रकार का अच्छा भोजन पूरे दिन में समयानुसार खाने से आपको स्वस्थ रहने में काफी मदद मिलेगी। पैकेज्ड और वसायुक्त खाने की मात्रा कम करने और अपनी थाली में ज्यादा फल और सब्जियाँ शामिल करने की कोशिश करें। संतुलित आहार ही स्वस्थ शरीर की कुंजी है।

स्वस्थ शरीर का वजन बनाए रखें : आप वही हैं जो आप खाते हैं। एक इष्टतम बॉडी मास इंडेक्स बनाए रखने से आप ऊर्जावान बने रहेंगे। आप आसानी से थकेंगे नहीं बल्कि पूरे दिन सक्रिय रहेंगे।

अपने आप को हाइड्रेट रखें : सुबह सुबह उठते ही सबसे पहले कम से कम 2 ग्लास गर्म पानी पिएँ। नियमित रूप से पानी पीने और शरीर को हाइड्रेट रखने से वजन कम करने में मदद मिलती है। पानी शरीर के विभिन्न अंगों के लिए जरूरी है। पर्याप्त पानी न पीने का बहाना कभी भी न बनाएँ। आप कहीं भी जाएँ, अपने साथ हमेशा पानी की बोतल साथ में रखें।

अच्छी नींद लें : रात को अच्छी नींद लेना अच्छे स्वास्थ्य को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। जल्दी सोने और जल्दी उठने की कोशिश करें। अगर आप अपनी नींद के तरीके को नियमित कर लें तो आपको अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में जरूर सकारात्मक बदलाव दिखाई देंगे।

नियमित रूप से अपनी जाँच करवाएँ : अपने स्वास्थ्य की निगरानी के लिए नियमित रूप से पूरे शरीर की जाँच करवाएँ। इस तरह अगर आपको अपने स्वास्थ्य में कोई असामान्यता भी दिखाई दे तो आप उसे जल्द से जल्द ठीक कर सकते हैं। किसी भी बीमारी का शुरुआत में ही पता चल जाना, बिल्कुल पता न चलने से हमेशा बेहतर होता है।

तनाव कम करने का प्रयास करें : लोगों की ज्यादातर स्वास्थ्य समस्याओं का एक मुख्य कारण तनाव है। तनाव के कारण ज्यादा खाना, ज्यादा सोना और अवसाद जैसी समस्याएं होती है, जो बदले में व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। इसलिए तनावरहित जीवन जीने का प्रयास करें और अपने स्वास्थ्य को ठीक रखें। तनावरहित जीवन तब भी जिया जा सकता है जब आप इन बातों पर ध्यान देना बंद करेंगे कि दूसरे क्या कार्य कर रहे हैं या दूसरे आपके विषय में क्या सोचते हैं।

स्क्रीन टाइम पर नियंत्रण रखें : आज की डिजिटल दुनिया में ज्यादा समय मोबाइल और कंप्यूटर स्क्रीन पर बिताने से आँखों, मानसिक स्वास्थ्य और नींद पर बुरा असर पड़ता है। इसलिए प्रतिदिन निश्चित समय के लिए ही स्क्रीन का उपयोग करें।

संतुलित दिनचर्या बनाएँ : काम, आराम और मनोरंजन – इन तीनों का संतुलन आवश्यक है। सिर्फ काम या सिर्फ मनोरंजन पर ध्यान देने से जीवन असंतुलित हो जाता है।

नशे से दूर रहें : धूम्रपान, शराब या अन्य नशीली चीजें धीरे–धीरे शरीर को कमजोर और रोगग्रस्त बना देती हैं। एक निरोगी काया के लिए इनसे दूरी बनाए रखना बेहद जरूरी है।

सकारात्मक सोच विकसित करें : अच्छे स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास महत्वपूर्ण है। नकारात्मक विचार शरीर को बीमारियों की ओर धकेलते हैं।

स्वच्छता का ध्यान रखें : नियमित रूप से स्नान करना, साफ कपड़े पहनना, हाथ धोना और आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखना रोगों से बचाव में सहायक हैं ।

पर्याप्त धूप और ताजी हवा लें : सुबह की धूप से शरीर को विटामिन डी मिलता है और ताजी हवा श्वसन तंत्र को मजबूत करती है। यह हड्डियों और इम्यून सिस्टम के लिए भी फायदेमंद है।

सामुदायिक और सामाजिक जुड़ाव : परिवार और मित्रों के साथ समय बिताने से मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है। अकेलापन कई बार अवसाद और तनाव की वजह बन सकता है। इसलिए ज्यादा से ज्यादा समय अपने परिवार और मित्रों के साथ बिताएँ

पर्याप्त हँसे और अपनी मुस्कान बनाए रखें : हँसना न केवल तनाव को कम करता है बल्कि हमारे प्रतिरक्षा तंत्र (इम्यून सिस्टम) को भी मजबूत बनाता है। रोजाना थोड़ी सी हँसी और मुस्कुराहट से मन प्रसन्न रहता है और शरीर भी स्वस्थ बना रहता है ।

1996 में साहित्य के नोबल पुरस्कार से पुरस्कृत पोलिश कवयित्री विस्साव शिम्बोर्स्का की रचना

कुछ को पसन्द है कविता

कुछ को-

सबको नहीं,
सब में से बहुतों को भी नहीं
बल्कि बहुत कम को
नहीं गिन रही स्कूलों को, जहाँ ज़रूरी है
और ख़ुद कवियों को
एक हज़ार में कोई दो लोगों को

पसन्द है-

पर किसी को चिकन सूप और नूडल भी पसन्द है
किसी को तारीफ़ें पसन्द हैं और नीला रंग
किसी को पुराना स्कार्फ़ पसन्द है
किसी को रौब जमाना पसन्द है
किसी को कुत्ते को सहलाना

कविता-

पर कविता है क्या
कई ढुलमुल जवाब दिए गए हैं इस सवाल के
लेकिन मैं नहीं जानती, नहीं ही जानती
पर थामे हुए हूँ इसे
जैसे जंगला पकड़ते हैं

(रेगीना ग्रोल के अँग्रेज़ी में किए गए अनुवाद से अनूदित)
अँग्रेज़ी से अनुवाद : अनूप सेठी

****

जीवन की सीख

विनोद कुमार
ऑपरेटर

जब तक थी ये जवानी,
सीना ठोक के चले – 2
जब तक आया बुढ़ापा,
सारे छोड़ कर चले – 2
जब तक दौलत कमायी,
हाथ जोड़ सब चले – 2
जब से छोड़ा कमाना,
मुँह मोड़े सब चले – 2

मतलब बिना कोई ना आये,
अपने भी हुए पराये,
मुफ्त मे यहाँ कोई ना खिलाये,
ना किसी के लिए कमाये,

इस बुढ़ापे मे खुद की देख भाल कर लो,
आयेगा ना कोई भी ये खयाल कर लो,

जब तक साथ थी खुशियाँ,
दिल जोड़ सब चले – 2
आयी गम की जो आँधी,
रिश्ते तोड़ सब चले – 2

बदलाव

प्रमोद पाठक
कार्या. सहा. (वि.एवं ले.)

ना देखो अब उस ओर जहाँ,
ना मानव है ना मानवता,
ना सुनो वहाँ की गूंज जहाँ,
ना किलकारी ना कोमलता,
है शोर ये गूँजा कहाँ–कहाँ,
अब ये कहना ना संभव है,
है उठा अजब तूफान नया,
है कहाँ गया वह विप्लव है ॥

है बदला अब ये दौर नया,
इक नई उमंग का घेरा है,
है समय की ये इक धूप नई,
जहां लगा खुशी का डेरा है।
स्वीकृत है बदलाव हमें,
कुछ नया ही मोड़ ये लाएगे,
है गुलिस्ताँ ये नया–नया,
कुछ नया ही दौर ये लाएँगे ॥

है सीमा का विस्तार नया,
बंधी नई सीमाएँ है,
है जीवन का दस्तूर यही,
हर परिवर्तन में बाधाए हैं।
जहां दिखी उम्मीद की किरण नई,
चल पड़ता हर मानव है,
अब आस की "पाठक" रुक जाए,
जहाँ खुशियों की गर्माहट है ॥

टीम वर्क का महत्व

अमित कुमार जोशी
कार्यालय सहायक

आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तेजी से बदलते हुए वर्किंग इनवायरमेंट में किसी भी संगठन की सफलता केवल व्यक्तिगत प्रतिभा पर नहीं, बल्कि एक मजबूत और संगठित टीम वर्क पर निर्भर करती है। टीम वर्क वह शक्ति है जो साधारण प्रयासों को असाधारण परिणामों में बदल देती है।

टीम वर्क क्या है?

टीम वर्क का मतलब है : विभिन्न क्षमताओं, सोच और दृष्टिकोण वाले लोगों का मिलकर काम करना, जिससे एक साझा लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। इसमें सहयोग, आपसी विश्वास, पारदर्शिता और सम्मान की भावना अत्यंत आवश्यक होती है।

टीम वर्क क्यों जरूरी है?

- **बेहतर समस्या समाधान :** जब लोग अपने अनुभव और दृष्टिकोण साझा करते हैं तो जटिल समस्याओं का समाधान अधिक कुशलता से निकाला जा सकता है।
- **नवाचार को बढ़ावा :** विविध सोच और विचारों का आदान–प्रदान नवाचार को जन्म देता है।
- **दबाव में बेहतर प्रदर्शन :** टीम एक–दूसरे का साथ देकर काम के दबाव को साझा करती है, जिससे मानसिक संतुलन बना रहता है।
- **सीखने का अवसर :** टीम के सदस्यों से संवाद और सहयोग के माध्यम से हम नए कौशल और दृष्टिकोण सीखते हैं।

एक सफल टीम के गुण :

- स्पष्ट संवाद
- नेतृत्व की स्पष्टता
- भरोसा और पारदर्शिता
- साझा उद्देश्य और लक्ष्य
- विविधता को स्वीकार करना

ऑफिस में टीम वर्क को कैसे बढ़ावा दें?

- खुला और सम्मानजनक संवाद सुनिश्चित करें।
- टीम मीटिंग्स और ब्रेनस्टॉर्मिंग सेशन्स को प्रोत्साहित करें।
- टीम के प्रयासों को मान्यता दें और उनकी सराहना करें।
- टीम के भीतर एक सकारात्मक और सहयोगी माहौल बनाएं।

निष्कर्ष :

एक व्यक्ति केवल सीमित दूरी तक जा सकता है, लेकिन एक टीम असीम ऊँचाइयों को छू सकती है। ऑफिस के माहौल में यदि टीम वर्क की भावना को सही दिशा दी जाए, तो न केवल कार्यक्षमता बढ़ती है, बल्कि कर्मचारी भी अधिक जुड़ाव और संतुष्टि महसूस करते हैं। आइए, हम सभी मिलकर एक ऐसे कार्यस्थल का निर्माण करें जहाँ ''मैं'' नहीं, ''हम'' की भावना हो – क्योंकि टीम वर्क ही वह आधार है, जिस पर किसी भी संगठन की सफलता टिकी होती है।

स्वास्थ्य श्लोक

लालता कुशवाह
तकनीशियन

इसे आप अपने जीवन मे तो उतार ही सकते हो,
साथ में आसपास बच्चों को भी सिखा सकते हो.....

पानी में गुड़ डालिए, बीत जाए जब रात,
सुबह छानकर पीजिए, अच्छे हों हालात।
धनिया की पत्ती मसल, बूंद नैन में डार,
दुखती अंखियां ठीक हों, पल लागे दो–चार।

ऊर्जा मिलती है बहुत, पिएँ गुनगुना नीर,
कब्ज खतम हो पेट की, मिट जाए हर पीर।
प्रातः काल पानी पिएँ, घूँट–घूँट कर आप,
बस दो–तीन गिलास है, हर औषधि का बाप।

ठंडा पानी पियो मत, करता क्रूर प्रहार,
करे हाजमे का सदा, ये तो बंटाधार।
भोजन करें धरती पर, अल्थी–पल्थी मार,
चबा–चबा कर खाइए, वैद्य न झांकें द्वार।

प्रातः काल खाओ फल, दुपहर लस्सी–छांस,
सदा रात में दूध पी, सभी रोग का नाश।
भोजन करके शाम में, घूमें कदम हजार,
डाक्टर, ओझा, वैद्य का, लुट जाए व्यापार।

घूंट–घूंट पानी पियो, रह तनाव से दूर,
एसिडिटी या मोटापा, होवें चकनाचूर।
अर्थराइटिस या हार्निया, अपेंडिक्स का त्रास,
पानी पीजै बैठकर, कभी न आवें पास।

रक्तचाप बढ़ने लगे, तब मत सोचो भाय,
सौगंध राम की खाइ के, तुरंत छोड़ दो चाय।
सुबह खाइए कुंवर–सा, दुपहर यथा नरेश,
भोजन लीजै रात में, जैसे रंक सुरेश।

देर रात तक जागना, रोगों का जंजाल, अपच,
आँख के रोग संग, तन भी रहे निढाल।
दर्द, घाव, फोड़ा, चुभन, सूजन, चोट पिराइ,
बीस मिनट चुंबक धरौ, पिरवा जाइ हेराइ।

सत्तर रोगों को करे, चूना हमसे दूर,
दूर करे ये बांझपन, सुस्ती अपच हुजूर।
भोजन करके जोहिए, केवल घंटा डेढ़,
पानी इसके बाद पी, ये औषधि का पेड़।

अलसी, तिल, नारियल, घी, सरसों का तेल, यही
खाइए नहीं तो, हार्ट समझिए फेल।
पहला स्थान सेंधा नमक, पहाड़ी नमक सुजान,
श्वेत नमक है सागरी, ये है जहर समान।

एल्यूमुनियम के पात्र का, करता है जो उपयोग,
आमंत्रित करता सदा, वह अड़तालीस रोग।
फल या मीठा खाइके, तुरंत न पीजै नीर, ये सब
छोटी आंत में, बनते विषधर तीर।

बिना इन्टरनेट मैप

हरिओम मीणा
वरि. कार्या. सहा. (मा.सं.)

यात्रा करते समय अक्सर ऐसा होता है कि इंटरनेट कनेक्शन नहीं मिलता या डाटा खत्म हो जाता है। ऐसे में गूगल मैप्स का ऑफलाइन फीचर बहुत काम आता है। यह आपको बिना इंटरनेट के भी अपनी मंजिल तक पहुंचने में मदद करता है।

गूगल मैप्स को ऑफलाइन उपयोग करने के लिए, आपको पहले उस क्षेत्र का मैप डाउनलोड करना होगा जहां आप यात्रा करने वाले हैं। यह प्रक्रिया बहुत सरल है, सबसे पहले, जब आपके पास इंटरनेट कनेक्शन हो तो गूगल मैप्स ऐप खोलें। अपनी प्रोफाइल पिक्चर पर टैप करें और''ऑफलाइन मैप्स चुनें। फिर –''अपना खुद का मैप चुनें'' पर टैप करें। अब आप मैप पर उस क्षेत्र को ठीक कर सकते है। जिसे आप डाउनलोड करना चाहते हैं। डाउनलोड करने से पहले, आपको बताया जाएगा कि यह कितनी जगह घेरेगा। –''डाउनलोड पर टैप करें। और मैप डाउनलोड करें।

एक बार मैप डाउनलोड हो जाने के बाद, आप बिना इंटरनेट के भी उस क्षेत्र में नेविगेशन प्राप्त कर सकते हैं। आप जूम–इन और आउट कर सकते हैं, सड़कों को देख सकते हैं और बारी–बारी से दिशा– निर्देश प्राप्त कर सकते हैं।

हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ऑफलाइन मैप्स में आपको रियल टाइम ट्रैफिक अपडेट्स, वैकल्पिक रास्ते, या किसी नए व्यवसाय की जानकारी नहीं मिलेगी। ये सुविधाएँ केवल इंटरनेट कनेक्शन होने पर ही उपलब्ध होती हैं। फिर भी, यह उन क्षेत्रों में यात्रा करने के लिए एक उत्कृष्ट सुविधा है जहां नेटवर्क कमजोर है या कोई इंटरनेट उपलब्ध नहीं है। डाउनलोड किए गए मैप्स आमतौर पर 30 दिनों में अपडेट होते हैं, इसलिए उन्हें समय–समय पर अपडेट करते रहना चाहिए।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत निम्नलिखित दस्तावेजों को द्वभाषी जारी किया जाना अनिवार्य है / Under section 3(3) of Official Language Act, 1963, following documents are required to be issued bilingual:

सामान्य आदेश / General Orders, संकल्प / Resolution, परिपत्र / Circulars, नियम / Rules, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन / Administrative or other reports, प्रेस विज्ञप्तियां / Press Release/Communique, संविदाएं / Contracts, करार / Agreements, अनुज्ञप्तियां / Licences, निविदा प्रपत्र / Tender Forms, अनुज्ञा पत्र / Permits, निविदा सूचनाएं / Tender Notices, अधिसूचनाएं / Notifications, संसद के पटल पर प्रस्तुत किए जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज पत्र / Reports and documents to be laid before the Parliament.

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा

संजीव कुमार
वरि. तकनीशियन

हिंदी शब्द की व्युत्पत्ति

हिन्दी शब्द का संबंध शब्द सिन्धु से माना जाता है। 'सिन्धु' नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस–पास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। यह सिन्धु शब्द ईरानी में जाकर हिन्दू, हिन्दी और फिर हिन्द हो गया। बाद में ईरानी धीरे–धीरे भारत के अधिक भागों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में विस्तार होता गया तथा हिन्दु शब्द सम्पूर्ण भारत का वाचक हो गया। इसी में ईरानी का ईक प्रत्यय लगने से (हिन्द ईक) अर्थात हिन्दीक बना जिसका अर्थ है हिन्द का। यूनानी शब्द इन्दिका या अंग्रेजी शब्द इण्डिया आदि इस हिन्दीक के ही विकसित रूप हैं।

हिन्दी की विशेषताएँ एवं शक्ति

हिन्दी भाषा के उज्जवल स्वरूप का एहसास कराने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी गुणवत्ता, क्षमता, शिल्प–कौशल और सौंदर्य का सही–सही आकलन किया जाये।

- संसार की उन्नत भाषाओं में हिंदी सबसे अधिक व्यवस्थित भाषा है।
- यह सबसे अधिक सरल भाषा है।
- यह सबसे अधिक लचीली भाषा है।
- यह दुनिया की एक मात्र भाषा है जिसके अधिकतर नियम अपवादविहीन है तथा यह सच्चे अर्थों में विश्व भाषा बनने की पूर्ण अधिकारी है।
- हिंदी लिखने के लिये प्रयुक्त देवनागरी लिपि अत्यंत वैज्ञानिक है।
- हिंदी को शब्द संपदा एवं शब्द रचना सामर्थ्य विरासत में मिली है। यह अनेक देशी भाषाओं एवं बोलियों आदि से शब्द लेने में संकोच नहीं करती। एक हिसाब से अंग्रेजी के मूल शब्दों की संख्या लगभग 10,000/– हैं जबकि हिन्दी के मूल शब्दों की संख्या लगभग ढाई लाख से भी अधिक है।
- हिन्दी बोलने एवं समझने वाली जनता पचास करोड़ से भी अधिक है।
- हिंदी साहित्य सभी दृष्टिकोण से समृद्ध है।
- हिंदी आम जनता से जुडी भाषा है तथा आम जनता हिंदी से जुड़ी हुई है।
- भारत के स्वतंत्रता संग्राम की वाहिका और वर्तमान में देशप्रेम का अमूर्त वाहन हिंदी भाषा ही है। हिन्दी के विकास की शुरुवाती दिनों में पहले साधू–संत एवं धार्मिक नेताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उसके बाद हिन्दी पत्रकारिता एवं स्वतंत्रता संग्राम से बहुत मदद मिली, फिर बॉलीवुड की हिन्दी फिल्मों से सहायता मिली और अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (टीवी चेनलों) के कारण हिन्दी समझने–बोलने वालों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है। हिन्दी में अनेक देशज शब्दों का प्रयोग होता है।

देशज का अर्थ है– –'जो देश में ही उपजा या बना हो' तथा जो न तो विदेशी हो और न किसी दूसरी भाषा के शब्द से बना है। उदाहरण खटिया, लुटिया यह किसी प्रदेश के लोगो ने बना लिया और हिन्दी ने इसे अपना लिया। यह हिन्दी भाषा की खासियत है।

शुद्ध हिन्दी क्या है?

हिन्दी में कई शब्द अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी आदि से भी आये हैं। इन्हें विदेशी शब्द कहते हैं। जिस हिन्दी में अरबी, फारसी, तुर्की तथा अंग्रेजी के शब्द लगभग पूरी तरह से हटा कर तत्सम शब्दों को ही प्रयोग में लाया जाता है, उसे 'शुद्ध हिन्दी' कहते हैं।

हमारा अभिमान है हिन्दी, भारत की शान है हिन्दी

हिन्दी हिन्दुस्तान की भाषा है। यह भाषा है हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की। हिन्दी ने हिन्दुस्तान को विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। हिन्दी हिन्दुस्तान को बंधती है। कभी गांधीजी ने इसे जनमानस की भाषा कहा था तो कभी इसी हिन्दी की खड़ी बोली को आमीर खुसरो ने अपनी भावनाओ को प्रस्तुत करने का माध्यम भी बनाया। हिन्दी से हजारों लेखकों में अपनी पहचान बनाई तथा इसे अपना कर्मभूमि बनाया। हिन्दी को देश के संविधान में राजभाषा की उपाधि इसके इन्हीं गुणों के कारण मिली है।

महात्मा गाँधी जी का सपना

जिस हिन्दी को संविधान में सिर्फ राजभाषा का दर्जा प्राप्त है उसे कभी गांधी जी ने खुद राष्ट्रभाषा बनाने की बात कही थी। सन् 1918 में हिन्दी साहित्य सम्मलेन की अध्यक्षता करते हुए गाँधी जी ने कहा था की हिन्दी ही देश की राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। लेकिन आजादी के बाद गाँधीजी का सपना पूरा किया जाना बाकी है।

भारतीय पुनर्जागरण के समय हिन्दी

राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन और महर्षि दयानंद जैसे महान नेताओं ने हिन्दी की खड़ी बोली का महत्व समझते हुए इसका प्रसार किया और अपने अधिकतर कार्यों को इसी भाषा में पूरा किया। हिन्दी के लिए पिछली सदी कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण रहा है। इस सदी में हिन्दी गद्य का न केवल विकास हुआ, वरन भारतेंदु हरिश्चंद्र ने उसे मानक रूप प्रदान किया। यही महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और सुमित्रानंदन पंत में हिन्दी खड़ी बोली को और प्रसार दिया। इन सभी रचनाकारो का हिन्दी के विकास में बहुत बड़ा योगदान रहा।

आजादी की लड़ाई में हिन्दी

हिन्दी ने भारत के औजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। देश के क्रांतिकारियों ने जनमानस से संपर्क साधने के लिए इसी हिन्दी भाषा का प्रयोग किया।

हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा

14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। इस दौरान सरकारी संस्थाओ में कहीं हिन्दी सप्ताह तो कहीं हिन्दी पखवाड़ा मनाया जाता है। सभी जगह जो कार्यक्रम आयोजित होते हैं उसमें निबंध, कहानी तथा कविता लेखन के साथ ही वाद–विवाद प्रतियोगितायें तथा परिचर्चा आयोजित होती हैं। इन सब गतिविधियों से राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन मिलता है। भारत में जब हर कागज पर हिन्दी लिखी जायेगी, तब जाकर कहीं हिन्दी पखवाड़ा और हिन्दी दिवस मनाने का लक्ष्य पूरा होगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वरदान या अभिशाप

रवीन्द्र कुमार
ऑपरेटर (मैकेनिकल)

आज के युग में विज्ञान और तकनीक ने मानव जीवन को जिस गति से बदला है, उसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या एआई) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। यह तकनीक अब केवल कल्पना नहीं रही, बल्कि हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन चुकी है –स्मार्टफोन में वॉयस असिस्टेंट से लेकर अस्पतालों में रोबोटिक सर्जरी तक, एआई हर जगह दिखाई देता है।

लेकिन प्रश्न यह है:

क्या यह प्रगति मानवता के लिए वरदान है या एक संभावित अभिशाप?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्या है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वह तकनीक है जिसमें मशीनों को इस प्रकार विकसित किया जाता है कि वे इंसानों की तरह सोचने, सीखने और निर्णय लेने में सक्षम हों।

उदाहरण :

- गूगल मैप्स रास्ता सुझाता है
- नेटफ्लिक्स पसंद के अनुसार शो रिकमेंड करता है
- चौटबॉट ग्राहक सेवा में सहायता करते हैं
- एलेक्सा, सिरी जैसे वॉयस असिस्टेंट आवाज पर प्रतिक्रिया देते हैं

एआई के फायदे – एक वरदान

स्वास्थ्य सेवा में क्रांति : एआई अब जटिल बीमारियों का तेज और सटीक निदान कर सकता है। रोबोटिक सर्जरी, कैंसर डिटेक्शन और हेल्थ डेटा एनालिसिस ने चिकित्सा को अधिक विश्वसनीय बना दिया है।

शिक्षा में नवाचार : एआई आधारित प्लेटफॉर्म छात्रों की रुचि और गति के अनुसार पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। जैसे : Byju*s, Coursera, Khan Academy।

औद्योगिक उत्पादकता में वृद्धि : मशीनों की सहायता से उत्पादन तेज और त्रुटिरहित हो गया है। इससे लागत घटती है और कार्यक्षमता बढ़ती है।

सुविधा और संचार में सरलता : ईमेल फिल्टर, वॉयस टाइपिंग, ऑनलाइन शॉपिंग रिकमेंडेशन आदि एआई की देन हैं, जिन्होंने रोजमर्रा के जीवन को आसान बना दिया है।

कृषि और पर्यावरण में योगदान : एआई फसलों की निगरानी, सिंचाई योजना और कीट नियंत्रण में सहायता करता है। साथ ही, इससे जलवायु परिवर्तन पर निगरानी भी संभव हुई है।

एआई के नुकसान – एक संभावित अभिशाप

बेरोजगारी का खतरा : ऑटोमेशन से कई परंपरागत नौकरियाँ खत्म हो रही हैं, जिससे रोजगार संकट पैदा हो सकता है।

निजता का हनन : एआई सिस्टम बड़ी मात्रा में व्यक्तिगत डेटा एकत्र करते हैं, जिससे निजता और डेटा सुरक्षा पर प्रश्न उठते हैं।

मानवीय संवेदनाओं की कमी : मशीनों में भावना और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती, जिससे संवेदनशील परिस्थितियों में गलत निर्णय संभव है।

दुरुपयोग की संभावना : एआई का प्रयोग साइबर क्राइम, फेक न्यूज, डीपफेक और स्वचालित हथियारों के रूप में भी हो सकता है।

मानसिक निर्भरता : एआई पर अत्यधिक निर्भरता से इंसानों की स्वाभाविक सोचने और निर्णय लेने की क्षमता कमजोर पड़ सकती है।

एआई का भविष्य –संतुलन और जिम्मेदारी जरूरी

एआई का विकास रोका नहीं जा सकता, लेकिन इसके उपयोग में संतुलन जरूरी है। इसके लिए आवश्यक है :

- **नैतिक दिशानिर्देश :** सरकारों और तकनीकी कंपनियों को स्पष्ट नियम बनाने चाहिए।
- **शिक्षा और कौशल विकास :** युवाओं को नई तकनीकों के अनुकूल बनाया जाए।
- **साइबर सुरक्षा कानून :** डेटा संरक्षण को प्राथमिकता दी जाए।
- **इंसान–मशीन सहयोग :** एआई को प्रतिस्पर्धी नहीं, सहायक के रूप में देखा जाए।

निष्कर्ष :

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक दोधारी तलवार है। इसका विवेकपूर्ण उपयोग मानव जीवन को आसान और उन्नत बना सकता है, जबकि अनियंत्रित उपयोग गंभीर खतरे उत्पन्न कर सकता है।

एआई का उद्देश्य इंसानों का स्थान लेना नहीं, बल्कि उन्हें सक्षम बनाना होना चाहिए। यदि हम इसे उपकरण के रूप में इस्तेमाल करें – मालिक के रूप में नहीं – तो यह तकनीक निश्चित रूप से हमें एक उज्ज्वल, सुरक्षित और प्रगतिशील भविष्य की ओर ले जा सकती है।

समय और सफलता

अनिल कुमार
वरिष्ठ तकनीशियन

सफलता के लिए अथवा किसी कार्य के संपन्न होने के लिए पांच बातों की आवश्यकता होती है। सबसे पहले उस व्यक्ति के आशय जो उसे कर रहा है, फिर साधना और उन चीजों की उपलब्धता जिससे वह कार्य होना है, तीसरी बात उस कार्य को करने का मनोभाव और उसे करने की इच्छा फिर उसे करने का समय, क्योंकि प्रत्येक कार्य को करने का एक निर्धारित समय होता है। यदि उसे सही समय पर नहीं किया जाये तो वह व्यर्थ हो जाता है। यदि आप फरवरी में बीज बोयेंगे, तो उसका कोई अर्थ नहीं है. फिर आप यह नहीं कह सकते कि मैंने बीज को बोया परंतु कुछ उगा नही। आप को बारिश तक इंतजार करना होगा और फिर यदि बीज को बोयेंगे तो सकारात्मक परिणाम सामने आयेंगे. इसलिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है।

इस बात को समझना होगा कि समय कैसे महत्वपूर्ण है और उसके बाद दैविक कृपा जरूरी है. दैविक कृपा के बिना सफलता संभव नहीं है, इसलिए आप सेवा, साधना और सत्संग करें। प्रयासों का सफल परिणाम समय पर मिलेगा। आपके द्वारा किये गये प्रयासों के परिणाम कभी भी व्यर्थ नही जायेंग। यदि अभी नहीं तो निश्चित ही उसके परिणाम बाद में मिल ही जायेंगे।

अनंत की खोज

नानक चन्द
परिचर

विराट अन्तरिक्ष के अनूठे सदृश्य लोक में,
अनेक ग्रह हैं, रवि अनेक चन्द्रमा हैं ।।
है इन्हीं में एक जिसमें जीव सृष्टि खेलती,
जिन्हें विकास पथ पर ये प्रकृति सदा धकेलती ।।

सृजन विभिन्न प्राणियों का है इन्हीं के फलस्वरूप
सभी में प्राण एक ही, परंतु हैं अनेक ।।
ब्रह्म रूपी आत्मा समस्त मूलाधार है,
है बस रहा सभी में एकमात्र निराकार है ।।

सत्य क्या, असत्य क्या, हूँ मैं इसी सोच में,
शून्य पर सवार मैं अनंत की हूँ खोज में ।।
विराट अन्तरिक्ष के अनूठे सदृश्य लोक में,
अनेकः ग्रह हैं, रवि अनेक चन्द्रमा हैं ।।

समझदारी

छतर पाल सिंह
वरिष्ठ संचालक

दिल्ली के एक छोटे मोहल्ले में मिनी नाम की एक चंचल लड़की रहती थी। मिनी 10 साल की थी और बहुत समझदार थी। एक दिन वह अपने कमरे में किताबें पढ़ रही थी कि बाहर से एक फेरीवाले की आवाज आई, ''कंबल ले लोऽऽऽ! रंग–बिरंगे, मजबूत कंबल ले लोऽऽऽ!'' मिनी ने यह आवाज सुनी और किताबें वहीं छोड़कर बाहर की ओर दौड़ पड़ी।

उसकी माँ शांति ने पीछे से आवाज लगाई, ''अरे मिनी, कहाँ भाग रही है? पढ़ाई तो कर ले पहले ! लेकिन मिनी कहाँ रुकने वाली थी। वह बाहर चली गई। शांति ने मन ही मन सोचा, ''पता नहीं इस मिनी को क्या हो गया है? जब भी यह फेरीवाला आता है, सब काम छोड़कर भाग जाती है। शाम को जब मिनी के पिता रमेश घर आए, तो शांति ने उनसे कहा, ''सुनो जी, मिनी को देखा आपने? जैसे ही फेरीवाले की आवाज सुनती है, बाहर दौड़ पड़ती है। मुझे तो चिंता हो रही है।''

रमेश ने हँसते हुए जवाब दिया, ''अरे, इसमें चिंता की क्या बात है? बच्ची है, उसे फेरीवाले के रंग–बिरंगे कंबल अच्छे लगते होंगे। मैं भी तो बचपन में कुल्फीवाले की आवाज सुनते ही दौड़ पड़ता था। शांति ने भी हँसकर कहा, ''यहाँ, मुझे भी याद है। मैं तो हवाई जहाज की आवाज सुनते ही नहाते–नहाते बाहर भाग आती थी। ''दोनों हँसने लगे, और बात वही खत्म हो गई। अगले दिन मोहल्ले में हंगामा मच गया। पड़ोस में रहने वाले श्यामलाल अंकल के घर में चोरी हो गई थी। श्यामलाल एक दिन पहले ही दिल्ली गए थे और सुबह लौटे तो देखा कि उनका घर बिखरा पड़ा है। अलमारी का ताला टूटा था, नकदी और कीमती सामान गायब था। पुलिस आई, जाँच की, और अपनी फाइलें भरकर चली गई। मिनी ने यह सब सुना और धीरे से बड़बड़ाई, ''मुझे पता था, आज कहीं न कहीं चोरी होगी।''

उसकी माँ शांति ने पूछा, ''क्या कह रही है, मिनी? क्या बड़बड़ा रही है?'' मिनी ने जवाब दिया, ''कुछ नहीं, माँ बाद में बताऊँगी। शांति सोच में पड़ गई कि मिनी को क्या हो गया है। उस दिन रविवार था। रमेश का ऑफिस बंद था। वैसे तो वे छुट्टी के दिन भी कभी–कभी ऑफिस चले जाते थे, लेकिन आज उन्होंने सोचा कि परिवार के साथ समय बिताएँ। खाना खाने के बाद वे मिनी और उसकी छोटी बहन रिया के साथ सांप–सीढ़ी खेलने बैठ गए। तभी फिर से वही फेरीवाले की आवाज आई, ''कंबल ले लोऽऽऽ! मजबूत कंबल ''मिनी चौंक गई। वह बाहर भागने लगी, लेकिन रुककर अपने पिता से बोली, ''पापा, आज आप भी चलो न फेरीवाले को देखने '' रमेश ने हँसते हुए कहा, ''क्या बात है, मिनी? मैं क्या बच्चा हूँ जो फेरीवाले को देखने जाऊँ? ''मिनी ने गंभीर स्वर में कहा, ''पापा, प्लीज ! मुझे आपसे कुछ जरूरी बात बतानी है। रमेश को मिनी की बात अजीब लगी, लेकिन वह उसकी जिद के आगे हार गए। वे बोले, ''चल ठीक है, ले चल। लेकिन यह क्या तमाशा है, बता तो ? मिनी रमेश का हाथ पकड़कर बाहर ले गई। फेरीवाला दूसरी गली की ओर मुड़ रहा था। मिनी ने पिता को खींचते हुए कहा, ''पापा, देखो, यह गली तो आगे बंद है। मुझे लगता है आज इसी गली में किसी घर में चोरी होगी। रमेश हैरान हो गए और बोले, ''क्या बकवास कर रही है,

मिनी? तू कोई जासूस है? तुझे कैसे पता?'' मिनी ने समझाया, ''पापा, मैंने देखा है कि पिछले तीन महीनो से जब भी यह फेरीवाला आता है, उसी दिन कहीं न कहीं चोरी हो जाती है। यह जिस गली में जाता है, उसी गली में चोरी होती है। मुझे शक है कि इसका चोरों से कोई कनेक्शन है। रमेश को मिनी की बात सुनकर थोड़ा यकीन हुआ। उन्हें याद आया कि इस गली में उनके दोस्त श्यामलाल रहते हैं, जो दिल्ली गए हुए हैं।

रमेश ने कहा, ''ठीक है, मिनी। लेकिन हमें पक्का सबूत चाहिए। चलो, अपने पड़ोसी पुलिस वाले अंकल को बताते हैं। ''शाम को रमेश ने पड़ोस में रहने वाले पुलिस इंस्पेक्टर अजय को सारी बात बताई। अजय ने सादी वर्दी में अपने दो सिपाहियों को उस गली में निगरानी के लिए भेज दिया। रात को चमत्कार हो गया। दो चोर एक घर में घुसते हुए रंगे हाथों पकड़े गए। अगले दिन फेरीवाले को भी पकड़ लिया गया। पुलिस ने उससे सख्ती से पूछताछ की, तो उसने कबूल कर लिया कि वह चोरों का मददगार था। वह गलियों में जाकर देखता था कि कौन सा घर खाली है, और चोरों को इशारा देता था। उसने पिछले तीन साल में हुई 20 चोरियों का खुलासा कर दिया।

इंस्पेक्टर अजय ने मिनी को बुलाया और पूछा, ''बेटी, तुम्हें कैसे पता चला कि इस फेरीवाले का चोरों से कनेक्शन है? ''मिनी ने जवाब दिया, ''अंकल, मैंने देखा कि जब भी यह फेरीवाला आता है, उसी दिन चोरी होती है। मैंने इसका पीछा किया और पाया कि यह जिस गली में जाता है, उसी गली में चोरी हो जाती है। मुझे शक हुआ, और मैंने पापा को बताया। अब फेरीवाला जेल में है। मिनी की माँ शांति को अब उसकी बाहर भागने की चिंता नहीं सताती। मिनी की समझदारी की पूरे मोहल्ले में तारीफ होने लगी।

सिक्का मुद्रण विभाग : भारतीय मुद्रा की नींव

गोविंद कुमार
वरिष्ठ तकनीशियन

भारत में सिक्कों का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है प्राचीन काल में चांदी, ताँबे और सोने के सिक्कों का उपयोग होता था। आज आधुनिक सिक्का निर्माण की जिम्मेदारी भारत सरकार के सिक्का मुद्रण विभाग पर है, जो वित्त मंत्रालय के अधीन कार्य करता है।

भारत में चार प्रमुख टकसाल हैं– मुंबई, हैदराबाद, कोलकाता, और नोएडा। कोलकाता टकसाल देश की सबसे पुरानी टकसाल है। जिसकी स्थापना 18वीं सदी में ईस्ट इंडिया कंपनी ने की थी। नोएडा टकसाल भारत की पहली पूरी तरह स्वचालित टकसाल है। ये टकसाल प्रचलन में आने वाले सिक्कों के साथ– साथ स्मारक सिक्के और संग्रहणीय सिक्के भी बनाते हैं। सिक्के बनाने की प्रक्रिया तकनीकी रूप से जटिल होती है। पहले सिक्के का डिजाइन तैयार किया जाता है। फिर धातुओं का चयन होता है। इसके बाद मशीनों द्वारा ढलाई, उकेरने का कार्य और परीक्षण होता है। हर सिक्के की गुणवत्ता की जाँच की जाती है ताकि वह मानकों पर खरा उतरे। विशेष अवसरों पर सिक्का मुद्रण विभाग महापुरुषो की जयंती या राष्ट्रीय उपलब्धियों पर स्मारक सिक्के जारी करता है। जैसे महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती या चंद्रयान मिशन पर विशेष सिक्के बनाए गए। आज डिजिटल भुगतान के दौर में सिक्कों की मांग में कमी आई है। लेकिन छोटे लेन–देन में इनकी उपयोगिता बनी हुई है। सिक्का मुद्रण विभाग भविष्य में तकनीक का उपयोग कर अपनी सेवाओं को और बेहतर करने की दिशा में कार्य कर रहा है। यह विभाग भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती का प्रतीक है।

चैट बिद फिश

शालिनी माथुर
कनिष्ठ कार्यालय सहायक
(प्रशिक्षु)

डॉल्फिन जैसी बड़ी और बहुत सी सुंदर और शानदार मछलियों को देखने के बाद हमारे मन में यह विचार उठता है कि अगर हम इनसे बात कर पाते तो कितना मजा आता, हमारी तरह वैज्ञानिकों ने भी इस बात पर गौर किया है, जल्द ही कुछ ऐसा करने वाले हैं कि मछलियों से बात करने का हमारा सपना सच होने वाला है। गूगल डीपमाइंड ने जोर्जिया के तकनीक शोधकर्ताओं के साथ मिलकर वाइल्ड डॉल्फिन प्रोजेक्ट के लिए खास एआई मॉडल विकसित किया है। डॉल्फिनजेम्मा नामक यह एआई मॉडल समुद्र में रहने वाली स्टेनेला फ्रोनटेलस प्रजाति की डॉल्फिन्स की आवाजों पर प्रशिक्षित किया गया है। यह एआई न सिर्फ इन डॉल्फिन्स की आवाजों को डी–कोड करता है, बल्कि उनसे उनकी ही भाषा में संवाद भी करता है।

1985 में वाइल्ड डॉल्फिन प्रोजेक्ट (डब्ल्यूडीपी) शुरू किया गया था जो गहरे पानी में सबसे लंबे समय से चल रहा डॉल्फिन रिसर्च प्रोजेक्ट हैं। यह प्रोजेक्ट गहरे पानी की डॉल्फिन मछलियों को और बेहतर तरीके समझने तथा उनके संरक्षण के लिए था। अटलांटिक में पाई जाने वाली स्टेनेला फ्रोनटेलस प्रजाति की खास डॉल्फिन्स का अध्ययन किया जा रहा है। इसके लिए वैज्ञानिकों ने डॉल्फिनजेम्मा नाम एआई तैयार किया है जो डॉल्फिनों से उनकी भाषा में बात करता है, डॉल्फिनजेम्मा एक ऑडियो–इन, ऑडियो –आउट मॉडल पर आधारित एआई है। यह प्राकृतिक रूप से मिल रही डॉल्फिन की आवाज को प्रोसेस करता है। उसके पेटर्न की पहचान करता है और यह अनुमान लगाता है कि मछली क्या कहना चाह रही है। इस एआई की मदद से एक और एप्लिकेशन चैट तैयार की जा रही है, जिसे गोताखोर पहनकर समुद्र में डॉल्फिन से उसकी भाषा में बात कर सकेंगे।

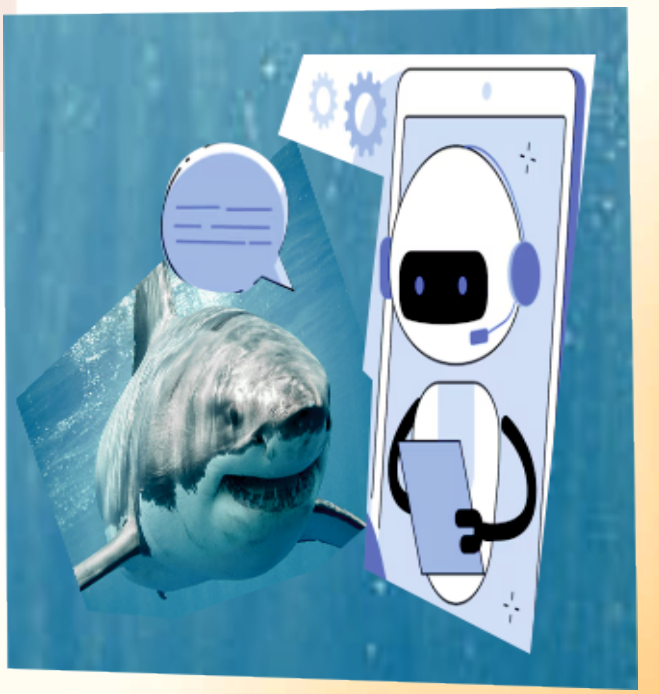

प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत

वैष्णवी सोनकर
सहायक प्रबंधक (विधि)

''न्याय केवल होना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि न्याय होते हुए दिखना भी चाहिए।'' – यह उक्ति प्राकृतिक न्याय के मूलतत्त्व को सरल शब्दों में स्पष्ट करती है। भारतीय विधिक व्यवस्था में 'प्राकृतिक न्याय' (Natural Justice) एक ऐसा मौलिक सिद्धांत है, जो प्रत्येक नागरिक को निष्पक्ष और न्यायसंगत सुनवाई का अधिकार प्रदान करता है।

प्राकृतिक न्याय के दो प्रमुख सिद्धांत :

Audi Alteram Partem ''दूसरी पक्ष को भी सुनो'' : इसका अर्थ है कि किसी भी व्यक्ति पर कोई प्रतिकूल निर्णय लेने से पहले उसे अपनी बात कहने का अवसर दिया जाए। यह सिद्धांत सुनिश्चित करता है कि व्यक्ति को अपने पक्ष में सफाई देने, साक्ष्य प्रस्तुत करने और सुनवाई प्राप्त करने का पूरा अवसर मिले।

Nemo Judex in Causa Sua –''कोई व्यक्ति अपने ही मामले में न्यायाधीश नहीं हो सकता'' : इसका आशय है कि निर्णय लेने वाला अधिकारी निष्पक्ष होना चाहिए और उसमें किसी प्रकार की व्यक्तिगत रुचि या पक्षपात नहीं होना चाहिए। यदि न्यायाधीश या अधिकारी स्वयं किसी पक्ष से जुड़ा हुआ है, तो न्याय की निष्पक्षता पर प्रश्नचिह्न लग सकता है।

प्राकृतिक न्याय का प्रशासनिक न्याय में महत्व

वर्तमान समय में जब प्रशासनिक कार्यवाहियाँ तेजी से होती हैं–जैसे कि अनुशासनात्मक कार्रवाई, स्थानांतरण, निलंबन, टर्मिनेशन आदि – तब यह सिद्धांत अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि किसी भी अधिकारी/कर्मचारी के विरुद्ध कोई कार्रवाई की जा रही हो, तो उसे उचित सुनवाई का अवसर देना आवश्यक है। यह केवल विधिक प्रक्रिया का हिस्सा नहीं बल्कि एक नैतिक कर्तव्य भी है।

न्यायपालिका की व्याख्या

भारत के उच्चतम न्यायालय ने अनेक मामलों में स्पष्ट किया है कि प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का पालन तब भी होना चाहिए जब कोई विधिक प्रावधान विशेष रूप से उसकी आवश्यकता न भी बताए। यह सिद्धांत न्यायपालिका की आत्मा माने जाते हैं।

निष्कर्ष

प्राकृतिक न्याय एक ऐसा अनदेखा सूत्र है, जो न्याय को केवल 'कानूनी प्रक्रिया' न बनाकर उसे 'मानवीय अनुभव' में बदलता है। यह सिद्धांत केवल अदालतों तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्येक संस्थान, प्रत्येक कार्यालय और प्रत्येक निर्णय प्रक्रिया में लागू होता है।

जीवन चक्र और सुख का द्वंद

शीशराम
पर्यवेक्षक (मा.स.)

इस संसार में यदि सुख की बात की जाए तो हमारे महापुरुषों ने कहा है कि पहला सुख है स्वस्थ हो काया,दूसरा सुख है पास हो माया अर्थात आपके पास एक स्वस्थ शरीर हो और दूसरा सुख है आप धन संपत्ति के स्वामी हों। यदि देखा जाए तो अधिकतर लोगों को ईश्वर की कृपा से एक स्वस्थ शरीर प्राप्त हो जाता है, किन्तु कुछ लोगो को शायद नहीं मिलता, फिर भी भगवान की कृपा से इनमे से कुछ लोग अपनी पारिवारिक संपन्नता, अच्छी शिक्षा या अपने विशेष गुणों के बल पर एक अच्छा एवं संतोषजनक जीवन व्यतीत करते है। निष्कर्ष यह निकलता है कि अधिकांश लोगों को पहला सुख यानि स्वस्थ शरीर मिल ही जाता है लेकिन इसके बाद भी अधिकतर लोग दूसरे सुख माया के अभाव मे अपने जीवन मे संतुष्ट नहीं होते और वे दुख में अपना जीवन व्यतीत करते है। चूंकि पहला सुख प्राप्त होने के बाद भी अधिकांश लोगों का जीवन कष्टों से भरा है इसलिए दूसरे सुख माया का महत्व स्वतः ही बढ़ जाता है।

दूसरे सुख (माया) या धन संपत्ति को आधार मानकर यदि हम इस संसार का वर्गीकरण करें तो यह इस प्रकार है :–

गरीबी रेखा से नीचे

इसके अंतर्गत सबसे निम्न स्तर के लोग शामिल किए जाते है जो गाँव मे बड़े जमीदारों के खेत खलिहानों में मजदूर के रूप में कार्यरत हैं या शहरों मे छोटे–मोटे कारखानों मे निम्न स्तर की नौकरी या मजदूरी करते हैं। आय के सीमित साधन होने के कारण ये केवल अपना व बच्चों का भरण पोषण ही कर पाते हैं एवं कच्चे घरों या झोपड़ –पट्टी मे रहने को मजबूर हैं। ये लोग सही ढंग से अपने बच्चों को शिक्षा भी नहीं दिला पाते, इनके बच्चे सरकारी स्कूलों मे आधी–अधूरी शिक्षा प्राप्त करते ही अपने परिवार के भरण–पोषण में मदद के लिए किसी छोटी–मोटी नौकरी की तलाश शुरू कर देते हैं और इसी में अपना जीवन गुजार देते हैं। अत्यधिक प्रयासों से यह वर्ग अपने से अगले स्तर तक पहुँचने की कोशिश करते हैं। परंतु इस स्तर को पार करने में कम से कम एक पीढ़ी समाप्त हो जाती है।

गरीब वर्ग

यह वर्ग गरीबी रेखा से नीचे वाले वर्ग से अधिक सम्पन्न है। इस वर्ग मे शहरों में नौकरीपेशा लोग एवं छोटे–मोटे दुकानदार/व्यवसायी और गाँव मे रहने वाले छोटे किसान हैं जिनके पास 2–4 बीघा जमीन है और ये खेती के लिए आधुनिक औजार एवं मजदूरों को भुगतान के आधार पर अपने खेतों में कार्य कराने में सक्षम हैं। अपने पक्के घरों में रहते हैं एवं अपने बच्चों का भरण–पोषण ठीक से कर पाते हैं तथा अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला कर अपने बच्चों को टीचर ,वकील डॉक्टर बैंक मैनेजर या किसी सरकारी कार्यालय मे अधिकारी या बाबू (क्लर्क) की

नौकरी पाने का लक्ष्य देते हैं जिसके लिए ये लगातार प्रयास करते रहते हैं। ये भी अपने अगले स्तर मे बढ़ने की लगातार कोशिश करते हैं । इस वर्ग के लोग भी अपने अगले स्तर को पार करने में कम से कम एक पीढ़ी समाप्त कर लेते हैं।

मध्यम वर्ग

यह एक सम्पन्न वर्ग है इस वर्ग को जीवन यापन मे कोई कष्ट नहीं है इस वर्ग को गरीब नहीं कहा जा सकता। इन लोगों को धन संपत्ति की कोई कमी नहीं होती जैसा चाहते हैं, जीते हैं। देश–विदेश मे जहाँ चाहे घूम सकते हैं पाँच सितारा होटलों में जाते हैं। इस वर्ग में बड़े अधिकारी एवं व्यवसायी कोई भी हो सकते हैं अपने जीवन में कोई कमी न होने के बाद भी अन्य वर्ग की भांति ये भी अपने से ऊपर वाले वर्ग को देख कर आगे बढ़ने की लगातार कोशिश करते हैं। इनकी संपत्ति अधिक होने के कारण विकास की गति तेज होती है ये अपनी मेहनत से जल्द ही उच्च वर्ग मे शामिल हो जाते हैं ।

उच्च वर्ग

ये संसार की लगबग 70 से 80 प्रतिशत संपत्ति के स्वामी होते हैं बड़ी–बड़ी कंपनियों होटल के मालिक होते हैं। लाखों कर्मचारियों के रोजगार व भरण पोषण इनके माध्यम से होता है। देश विदेशों मे जहां चाहे रहते हैं अपने चार्टर्ड प्लेन रखते हैं। इनको गाड़ी–बंगले, नौकर–चाकर किसी चीज की कोई कमी नहीं होती । इस वर्ग में देश के जाने–माने बड़े अधिकारी, व्यवसायी, कलाकार , नेता अभिनेता एवं मंत्री एवं पुराने राज परिवार कोई भी हो सकता है। यह एक सम्पन्न वर्ग से भी सम्पन्न वर्ग है देखने से ऐसा ही प्रतीत होता है कि इस वर्ग के जीवन में कोई कष्ट नहीं होता, किन्तु गहराई से देखने पर यह नहीं कहा जा सकता कि इन्हे कोई दुःख नहीं होता, इनका दुःख ये ही जाने, इनकी सबसे बड़ी चिंता यही होती है कि ऊपर वाले ने जो थाली परोसी है, उसे कैसे बरकरार रखा जाए। इस वर्ग के लोग आगे बढ़ने के

नहीं बल्कि अपने स्तर पर कायम रहने के प्रयास करते हैं। क्योंकि यह स्तर सबसे ऊपर है और इसके बाद नीचे आना स्वाभाविक है क्योंकि अपने स्तर को बरकरार रखना बहुत कठिन है। एक लंबे अंतराल के बाद इनका पतन होने की संभावना लगातार बनी रहती है।

उपरोक्त चारों वर्ग समय के चक्र मे एक फेयरी व्हील (झूले) में बैठे लोगों की तरह नीचे से ऊपर से जाते हैं और घूम कर फिर वापस नीचे आते हैं इस

उतार–चढ़ाव के क्रम में उतरते हैं जिसमें कम से कम एक पीढ़ी या उससे भी अधिक पीढ़ी का समय लगता है और वह जिस स्तर पर होता है वैसा ही सहन करना पड़ता है। यह अच्छा समय भी हो सकता है और बुरा भी। इसे समझने के लिए उदाहरण के तौर पर एक बार एक बुजुर्ग व्यक्ति ने अपने पड़ोस के एक लड़के को रोक कर कहा "बेटे मैं अक्सर यह देखता हूँ कि आप कोई काम भी नहीं करते और इतनी महंगी (लग्जरी) गाड़ी मे घूमते हो, जबकि तुम पेट्रोल भरने के पैसे भी नहीं कमाते। कुछ तो काम कर लिया करो।" इस पर लड़के ने जो जबाब दिया "अंकल मुझे कमाने का कोई शौक नहीं है, मुझे तो केवल घूमने–फिरने का शौक है इसलिए मैं घूमता रहता हूँ, लेकिन हाँ मेरे पापा को कमाने को बहुत शौक है और वे तो अभी भी कमा रहे हैं।" यहाँ दो अलग अलग वर्ग हैं और दोनो ही अपने–अपने समय में जीवन यापन कर रहे हैं। संपन्नता के आधार पर देखें तो जल चक्र की भॉति मनुष्य जीवन भी एक चक्र है जिसमें मनुष्य झूले में बैठे लोगों की तरह ऊपर जाते हैं और फिर नीचे आ जाते हैं लेकिन झूले में बैठे लोगो की तरह जल्दी से नींचे से ऊपर और ऊपर से नीचे नहीं आ सकते है। इसमें एक या अधिक पीढ़ी समाप्त हो जाती हैं।

इस जीवन चक्र को समझने के उपरांत अब प्रश्न यह है कि इस संसार में यदि खुदा, भगवान या कोई भी ईष्ट देव विद्यमान है तो उससे क्या मांगें? मैंने तो अपने ईष्ट (भगवान) से मांगा है कि यदि अगला जन्म है तो अगले जन्म में मुझे कम से कम मध्यम वर्ग में स्थान दे। यदि यह नहीं मिल सकता तो कम से कम एक अच्छी पत्नी, एक अच्छा बॉस और एक अच्छे पड़ोसी के अलावा कुछ अच्छे मित्र जरूर दे जिनके साथ खुशहाल जीवन जिया जा सके। यह इसलिए क्योंकि एक नौकरीपेशा आदमी के लिए इतना ही पर्याप्त है। इस बारे में आप अपने लिए खुद सोच विचार करें कि आपको क्या चाहिए।

जल संकट

मनीष कुमार मिश्रा
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर

जल संकट बढ़ रहा है, धरती गरम हो रही है,
जरूरत से ज्यादा दोहन से, प्रकृति संतुलन खो रही है।
दुनिया सिमटती जा रही है, चाँद पर पहुंच गया इंसान,
जहां लहराते थे खेत कभी, वहां बन गए अब मकान।

खेत खलिहान बंजर हो रहे, गहरे हो रहे कूप,
भयंकर गर्मी हाहाकार करे और पेड़–पौधे गए सूख।
अब संयुक्त परिवार नहीं रहे,
जो हैं वो भी घटते जा रहे हैं,
हिस्से आए हैं जो खेत उनके, वह भी बँटते जा रहे हैं।

अन्न, जल खत्म और होगी बेगारी,
फैलेंगे रोग और बढ़ेगी बीमारी,
जीव जन्तु हो रहे गुम, धरा में कार्बन रहा घुल।

जल संकट बढ़ रहा है, धरती गरम हो रही है,
जरूरत से ज्यादा दोहन से, प्रकृति संतुलन खो रही है।

जल कुदरत की देन है, करें इसका सम्मान,
दूषित इसे नहीं करें, यह होगा अपमान।
आओ मिलकर हम सभी, छेड़ें यह अभियान,
जल का भंडारण सब करें, होगा तभी विहान।

वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ

आशीष शर्मा
कनि. हिन्दी अनुवादक

Notes and orders at page-----may please be seen in this connection
इस संबंध में पृष्ठ.... पर दिए गए टिप्पणों और आदेशों को कृपया देख लिया जाए

Examine the proposal in the light of observation at 'A' above
उपर्युक्त 'क' में की गई टिप्पणी को ध्यान में रखते हुए प्रस्ताव की जांच करें

Copy of the letter referred to above is sent here with
उपर्युक्त पत्र की प्रति इसके साथ भेजी जा रही है

Above resolution be published in the gazette of india
उपर्युक्त संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए

Draft reply on the lines suggested above
उपर्युक्त सुझावों के आधार पर उत्तर का प्रारूप

Advance of T.A. may please be arranged
कृपया यात्रा भत्ते के अग्रिम की व्यवस्था करें

As regards the particular matter in question
जहां तक विचाराधीन मामले का संबंध है / विचारधीन मामले के बारे में

Enquiry may be completed and report may be submitted early
जांच पूरी करके रिपोर्ट शीघ्र प्रस्तुत की जाए

Figures for the corresponding period of the last year, are not readily available
तदनुरूप अवधि के गत वर्ष के आंकड़े तत्काल उपलब्ध नहीं हैं

Following employees are confirmed in their posts with effect from-
निम्नलिखित कर्मचारी अपने वर्तमान पद पर तारीख..से स्थायी किए जाते हैं

has represented that his pay may be fixed in accordance with new rules
ने अभ्यावेदन दिया है कि उनका वेतन नए नियमों के अनुसार नियत किया जाए

There is no cause to modify the orders already passed
पहले दिए गए आदेशों में परिवर्तन करने का कोई कारण नहीं है

No reference is coming
पिछला संदर्भ नहीं मिल रहा है

Exigencies of administrative work
प्रशासनिक कार्य की तात्कालिक आवश्यक्ताएं

I have been directed to acknowledge the receipt of your letter no---- dated
मुझे यह निदेश हुआ है कि आपके तारीख... के पत्र संख्या..... की पावती की सूचना दूं

Exigencies of administrative work
प्रशासनिक कार्य की तात्कालिक आवश्यक्ताएं

I have been directed to acknowledge the receipt of your letter no---- dated
मुझे यह निदेश हुआ है कि आपके तारीख... के पत्र संख्या..... की पावती की सूचना दूं

Action may be taken as proposed
यथाप्रस्तावित कार्रवाई की जाए

Facts of the case in brief are as follows
संक्षेप में मामले के तथ्य इस प्रकार हैं–

Competent authority's sanction is necessary
सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी आवश्यक है

Timely compliance may be ensured
समय पर अनुपालन सुनिश्चित कर लिया जाए

संस्कृत का महत्व

प्रमोद द्विवेदी
वरि. कार्या. सहा. (मा.सं.)

संस्कृत भारत की प्राचीनतम और सबसे महत्वपूर्ण भाषाओं में से एक है, जो ज्ञान, संस्कृति और साहित्य का भंडार है, साथ ही यह भारतीय भाषाओं की जननी भी है।

संस्कृत भाषा के महत्व के कुछ बिंदु इस प्रकार है :

प्राचीन ज्ञान का स्रोत: संस्कृत में वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत जैसे महत्वपूर्ण धार्मिक और साहित्यक ग्रंथ रखे गए हैं, जो भारतीय ज्ञान और संस्कृति का आधार हैं।

भारतीय भाषाओं की जननी : संस्कृत से ही कई भारतीय भाषाएँ विकसित हुई हैं, इसलिए यह भारतीय भाषाओं में एक महत्वपूर्ण भाषा है।

साहित्यक रचनाओं का माध्यम : संस्कृत साहित्य में उत्कृष्ट रचनाएँ हैं, जिनमे नाटक, कविता, व्याकरण, दर्शन, विज्ञान आदि शामिल हैं।

वैदिक संस्कृति का प्रतीक : संस्कृत वैदिक संस्कृति का प्रतीक है और भारतीय संस्कृति को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

ज्ञान और विज्ञान का माध्यम : संस्कृत ने ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है, और यह भाषा इन क्षेत्रों में प्रगति को बढ़ावा देती है। भारतीय एकता को मजबूत करती है

पंच–केदार

हेमा
उप महाप्रबंधक (वि.एवं ले.)

उत्तराखंड के पावन गढ़वाल हिमालय में स्थित ''पंच–केदार'' भगवान शिव को समर्पित पांच अलौकिक धाम हैं, जिनमें शिव के अलग–अलग अंगों की पूजा होती है। ये धाम हैं केदारनाथ, केदार तुंगनाथ, केदार रुद्रनाथ, केदार मद्महेश्वर और केदार कल्पेश्वर।

पंच केदार की कथा पांडवों से जुड़ी है। महाभारत युद्ध के पश्चात जब पांडव अपने स्वजनों और गुरुओं की हत्या के पाप से व्यथित हुए तब उन्होंने भगवान शिव से क्षमा याचना के लिए हिमालय की शरण ली। किंतु युद्ध के अपराधों, विशेषकर छल–कपट से हुए रक्तपात के कारण भगवान शिव उनसे रुष्ट थे और दर्शन नहीं देना चाहते थे। भगवान शिव गुप्तकाशी में एक बैल (नंदी) का रूप धारण कर छिप गए। परंतु जब भीम ने उन्हें पहचान लिया और पकड़ने का प्रयास किया तो वह बैल जमीन में विभाजित हो गया। इसका कूबड़ केदारनाथ में प्रकट हुआ, नाभि मद्महेश्वर में, चेहरा रुद्रनाथ में, भुजाएं तुंगनाथ में और इसके बाल कल्पेश्वर में निकले। शिव जैसे ही धरती में समा रहे थे वैसे ही भीम ने पीठ के ऊपरी हिस्से को आधे जमीन में समाया हुआ पकड़ लिया। फिर शिव ने उनको दर्शन देकर पापों से मुक्त किया था। उसके बाद से ही बैल की पीठ की आकृति–पिंड रूप में भगवान शिव केदारनाथ मंदिर में पूजे जाते हैं। शिव के अन्य भाग पूरे गढ़वाल क्षेत्र में विभिन्न जगहों पर स्थापित हैं।

केदारनाथ

यहां शिव की पीठ, (कूबड़) है। भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में सम्मिलित केदारनाथ धाम पंचकेदारों में सर्वोच्च है। समुद्र तल से 3,583 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह मंदिर पत्थर की विशाल शिलाओं से निर्मित है और इसकी स्थापना का श्रेय आदिगुरु शंकराचार्य को दिया जाता है। यहां शिव एक शंकु आकार के पिंड रूप में पूजित हैं, जो ''उनके बैल स्वरूप की पीठ का प्रतीक है। मंदिर का गर्भगृह, मंडप और इसकी प्राचीन वास्तुकला इसे आध्यात्मिक और स्थापत्य दोनों दृष्टि से अद्वितीय बनाते हैं।

कैसे पहुंचें? –

ऋषिकेश से सोनप्रयाग तक सड़क मार्ग से पहुंचा जा सकता है। वहां से गौरीकुंड होते हुए 18 किमी की पैदल यात्रा करनी होती है। हेलिकॉप्टर सेवा भी उपलब्ध रहती है। यात्रा का सही समय मई–जून और सितम्बर–अक्टूबर होता है।

तुंगनाथ

यहां शिव की भुजाएं हैं। तुंगनाथ धाम को विश्व का सबसे ऊंचाई (3680 मीटर) पर स्थित शिव मंदिर माना जाता है। यही वह स्थान है, जहां शिव की भुजाएं प्रकट हुई थीं। यह मंदिर नंदा देवी, चौखंबा

और नीलकंठ जैसे हिमालयी शिखरों से घिरा है। यहाँ पाँच मंदिरों का एक समूह भी है जो आकार में काफी छोटा है और पंच केदार को समर्पित है जो तुंगनाथ मंदिर के दाँई ओर मौजूद है।

कैसे पहुंचें?:- रुद्रप्रयाग जिले के चोपता बुग्याल से केवल 4 किमी की सरल ट्रेकिंग से पहुंचा जा सकता है। यात्रा का सही समय अप्रैल से नवम्बर है।

रुद्रनाथ

यहां शिव का मुख है। 2286 मीटर की ऊंचाई पर स्थित रुद्रनाथ मंदिर प्राकृतिक चट्टान से निर्मित है। यहीं शिव का मुख प्रकट हुआ था और उनकी ''नीलकंठ महादेव'' रूप में पूजा होती है। यह पंचकेदारों में सबसे कठिन यात्रा वाला धाम माना जाता है। मंदिर के समीपवर्ती कुंडों जैसे सूर्य कुंड, चंद्र कुंड, तारा कुंड आदि का विशेष धार्मिक महत्व है।

कैसे पहुंचें?

गोपेश्वर से सगर गांव तक सड़क मार्ग से और फिर वहां से 20 किमी की ट्रेकिंग करनी होती है। रुद्रनाथ की यात्रा का श्रेष्ठ समय मई से अक्टूबर तक है।

मद्महेश्वर

3289 मीटर ऊंचाई पर स्थित यह मंदिर भगवान शिव की नाभि के प्रतीक शिवलिंग को समर्पित है। यहां शिव स्वरूप में भी पूजित होते हैं। मंदिर का वातावरण अत्यंत शांत और दिव्य होता है, जहां से केदारनाथ और चौखंबा की बर्फीली चोटियां स्पष्ट दिखती हैं।

कैसे पहुंचें?

उखीमठ से उनियाना गाँव और वहां से लगभग 19 किमी की ट्रेकिंग के बाद मंदिर पहुंचा जाता है। यात्रा का उपयुक्त समय मई से अक्टूबर है।

केदार कल्पेश्वर

2200 मीटर की ऊंचाई पर उर्गम घाटी में स्थित यह मंदिर वह स्थान है, जहां शिव की जटाएं प्रकट हुई थीं। यहाँ शिव ''जटाधारी'' या ''जटेश्वर'' के रूप में पूजित हैं। मंदिर का निर्माण नागर शैली में हुआ है और इसके ऊपर बनी विशाल मीनार श्रद्धालुओं को आकर्षित करती है। यह पंचकेदारों में एकमात्र ऐसा धाम है, जो पूरे वर्ष खुला रहता है।

कैसे पहुंचें?

हेलंग से उर्गम घाटी होते हुए मंदिर तक पहुंचना संभव है। यहां से मंदिर तक की दूरी केवल 2 किमी है। यात्रा का उचित समय मई–जून और सितम्बर–अक्टूबर है।

"देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है।"

–महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिन्दी पखवाड़ा–2024

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में दिनांक 14 से 30 सितंबर, 2024 तक 'हिन्दी पखवाड़ा–2024' आयोजित किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता, राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता, टंकण प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अलावा इकाई में राजभाषा हिन्दी के प्रोत्साहन के लिए एक काव्य संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। इन सभी गतिविधियों में इकाई के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया गया।

स्वच्छता ही सेवा अभियान –2024

14 सितम्बर 2024 से 1 अक्टूबर 2024 तक आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत भारत सरकार टकसाल, नोएडा में स्वच्छता अभियान चलाया गया जिसका नेतृत्व मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने किया। इस दौरान माननीय पूर्व सांसद एवं केंद्रीय विदेश एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। उन्होंने इस अवसर पर संदेश दिया कि कार्यालय परिसर में 'न हम गंदगी करेंगे, न किसी को करने देंगे'।

स्वच्छता अभियान –2025

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में दिनांक 16 से 31 जनवरी, 2025 तक स्वच्छता अभियान के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अच्छी संख्या में प्रतिभागिता की गई। इस अवसर पर श्री दुर्गेशपति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने कर्मचारियों को स्वच्छता शपथ दिलाई।

गणतंत्र दिवस –2025

गणतंत्र दिवस, 2025 के अवसर पर इकाई में दिनांक 26 जनवरी, 2025 को मुख्य महाप्रबंधक महोदय की अध्यक्षता में गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया। गणतंत्र दिवस –2025 के कार्यक्रम में इकाई के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर बच्चों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी प्रस्तुत की गई ।

राजभाषा पुरस्कार

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जयपुर, राजस्थान में दिनांक 17.02.2025 को आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में इकाई को 'क' क्षेत्र में, उत्तरी -2 क्षेत्र में, उपक्रमों की श्रेणी में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए ''प्रथम पुरस्कार'' से पुरस्कृत किया गया। इकाई की ओर से यह पुरस्कार श्री दुर्गेश पति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, भारत सरकार टकसाल, नोएडा एवं प्रमाणपत्र श्री हीरा मणि सुयाल, उप प्रबन्धक (राभा) ने प्राप्त किया।

मेगा मॉकड्रिल

भारत सरकार टकसाल, नोएडा की सीआईएसएफ यूनिट द्वारा दिनांक 20.02.2025 को सीआईएसएफ आईजी मिंट नोएडा के कर्मचारियों तथा अन्य सुरक्षा एजेंसियों के साथ समन्वय करते हुए 'बम थ्रेट कॉल' थीम पर 'मेगा मॉक ड्रिल' का आयोजन किया गया। श्री दुर्गेश पति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, भारत सरकार टकसाल, नोएडा द्वारा 'मेगा मॉक ड्रिल' का निरीक्षण किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस – 2025

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में ''अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2025'' के अवसर पर दिनांक 08 मार्च 2025 को महिलाओं को समर्पित कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक महोदय, इकाई की महिला अधिकारी एवं कर्मचारी तथा अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

सीएसआर पहल

एसपीएमसीआईएल की सीएसआर पहल के तहत दिनांक 23.05.2025 को कलेक्ट्रेट, सूरजपुर में भारत सरकार टकसाल, नोएडा और जिला प्रशासन, गौतम बुद्ध नगर के बीच श्री मनीष कुमार वर्मा, जिला कलेक्टर, श्री दुर्गेश पति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, भारत सरकार टकसाल, नोएडा और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में 09–20 वर्ष की आयुवर्ग की 2500 बालिकाओं में सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम के लिए टीकाकरण अभियान चलाने हेतु रुपये 89,00000/– लागत की परियोजना के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस–2025

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में मुख्य महाप्रबंधक महोदय के नेतृत्व में दिनांक 21.06.2025 को ''एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग'' थीम पर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2025 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर योग एवं प्राणायाम का अभ्यास कराया गया तथा पौध-रोपण कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

नराकास के तत्वावधान में प्रतियोगिता

भारत सरकार टकसाल, नोएडा द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), नोएडा के तत्वावधान में दिनांक 23.06.2025 को ''राजभाषा ज्ञान एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता'' का आयोजन किया गया, जिसमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), नोएडा के सदस्य कार्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

स्वतंत्रता दिवस 2025

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में स्वतंत्रता दिवस-2025 के अवसर पर दिनांक 15 अगस्त, 2025 को मुख्य महाप्रबंधक महोदय की अध्यक्षता में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में इकाई के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक महोदय द्वारा उपस्थितजन को संबोधित किया गया। इसके अलावा कर्मचारियों के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए तथा स्वतंत्रता के प्रतीक तिरंगे गुब्बारो को भी उड़ाया गया।

'हिंदी दिवस – 2025 एवं पाँचवाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में दिनांक 14 सितंबर 2025, रविवार को गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर में 'हिंदी दिवस–2025' के अवसर पर 'पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' का उद्घाटन समारोह आयोजित हुआ।

इस अवसर पर उन्होंने "भारती" बहुभाषी अनुवाद सारथी, हिन्दी शब्द–सिंधु (संस्करण –3.0) (7 लाख शब्दों के साथ उन्नत स्वरूप तथा साथ ही, मानक प्रणाली पर आधारित हिन्दी आशुलिपि के "स्व शिक्षण मॉड्यूल" का भी लोकार्पण किया।

भारत मंडपम, नई दिल्ली में दिनांक 26 जून 2025 को राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर श्री टी नागराजन, निदेशक (वित्त), एसपीएमसीआईएल एवं श्री दुर्गेश पति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, भारत सरकार टकसाल, नोएडा।

प्रकाशित : अरिहन्त हैन्ड मेड, 7982312681